मानसिक दुर्बलता का उपचार करना एक कठिन कार्य है वस्तुतः इसका पूर्ण सफल इलाज संभव ही नहीं है। अब तक कोई भी ऐसी आधुनिक चिकित्सा प्रणाली विकसित नहीं हो पाई है जिससे कि सीमित बुद्धि के व्यक्ति को सामान्य बुद्धि वाला व्यक्ति बनाया जा सके। हाँ- यदि प्रारंभिक अवस्था में पता चल जाता है तो उसमें कुछ हद तक ~~सुधार लाकर~~ व प्रशिक्षण आदि के माध्यम से थोड़ा बहुत सुधार लाया जा सकता है जिससे कि वे अपना जीवनयापन कर सकें। वर्तमान में मानसिक दुर्बलता की रोकथाम या उपचार के जो भी प्रावधान एवं प्रविधि हैं उन्हें दो भागों में बाँटा जा सकता है:-

(1) निरोधात्मक प्रविधि।

(2) उपचारात्मक प्रविधि।

(1.) निरोधात्मक उपाय (Preventive techniques):- निरोधात्मक उपाय से तात्पर्य उन प्रविधियों से है जिसका उपयोग कर ऐसे समाज पर भार बढ़ाने वाले बच्चों को पैदा लेने से रोका जा सकता है। इसके तहत आने वाले उपाय "Prevention is better than cure" के सिद्धान्त पर काम करते हैं। रोकथाम के प्रमुख उपाय निम्नलिखित हैं:-

(i) बंध्याकरण:- यह एक सरल उपाय है। मानसिक दुर्बलता से ग्रस्त व्यक्ति के बच्चे भी प्रायः मानसिक दुर्बलता के शिकार होते हैं। अतः ऐसे माता पिता का नसबंदी या बंध्याकरण करके संतानोत्पत्ति की क्षमता को समाप्त कर दिया जाता है तो उनकी बढ़ती संख्या पर विराम लगाया जा सकता है। क्योंकि ऐसे बच्चे परिवार, समाज एवं स्वयं अपने-आप पर भार होते हैं। पेज का मानना है कि इस प्रावधान के द्वारा कम से कम 15%. मानसिक दुर्बलों की संख्या को कम किया जा सकता है।

(ii) गर्भ निरोधक:- यह भी बन्ध्याकरण का एक उपप्रकार है ऐसी माँ को गर्भ निरोधक, कंडोम, मालाडी, माला एन० गोलियों के

(2) उपचारात्मक प्रविधियाँ (curative technique) :-

उपचारात्मक प्रविधियों से तात्पर्य उन उपायों से है जिसके द्वारा मानसिक दुर्बलता के शिकार व्यक्तियों को शिक्षित/प्रशिक्षित करके उनकी स्थिति में थोड़ा सा सुधार लाया जा सकता है। इसके माध्यम से उनका पुनर्वास (Rehabilitation) की व्यवस्था की जा सकती है। वे अपना जीवनयापन करने लायक बन सकते हैं।

(i) माता पिता को शिक्षित करके :- माता पिता को शिक्षित करके इस लायक बनाया जा सकता है कि अपने बच्चों की मानसिक स्थिति को समझे, उसे उचित देख रेख करें, तिरस्कृत न करें और भगवान भरोसे न छोड़ दें। Early childhood में बच्चों की ऐसे लक्षणों पर ध्यान देने से, घर पर ही मोटे काम, कजन ढोना, ईंट-मट्टी का काम आदि सीख सकते हैं जो बाद में उन्हें आत्म निर्भर बनने में मदद कर सकता है। उनके माता पिता यदि शिक्षित हो जाते हैं तो उनमें पैदा लक्षणों को पहचान कर उसका उचित देखभाल करेंगे, जिससे उन्हें प्रेरणा मिलेगी और मोटा काम करने लायक हो सकते हैं।

(ii) स्कूल प्रशिक्षण :- वैसे बच्चे जो साधारण मानसिक दुर्बलता यानी Morons type के हैं उन्हें विद्यालय स्तर पर कामचलाऊ ढंग से अपना काम चलाने लायक प्रशिक्षण दिया जा सकता है। इससे उन्हें आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। उनकी शिक्षा के लिए Special class, Speciall syllabous और Specially trained teacher की व्यवस्था होनी चाहिए जिससे वे शिक्षा/प्रशिक्षण आसानी से ग्रहण कर सकें और आत्मनिर्भर बन जाएं।

(iii) घरेलू प्रशिक्षण :- मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि ऐसे बच्चों को घरेलू माहौल में घर के सदस्यों द्वारा उचित तरीके से दिया गया प्रशिक्षण काफी कारगर होता है।

(iv) व्यवसाय चिकित्सा :- यह काफी लाभप्रद प्रविधि है। ऐसे बच्चों को उनके बुद्धि के लिहाज से पत्थर तोड़ना, मिट्टी का काम

(2) उपचारात्मक प्रविधियाँ (curative technique) :-

उपचारात्मक प्रविधियों से तात्पर्य उन उपायों से है जिसके द्वारा मानसिक दुर्बलता के शिकार व्यक्तियों को शिक्षित/प्रशिक्षित करके उनकी स्थिति में थोड़ा सा सुधार लाया जा सकता है। इसके माध्यम से उनका पुर्नवास (Rehabilitation) की व्यवस्था की जा सकती है। वे अपना जीवनयापन करने लायक बन सकते हैं।

(1) माता पिता को शिक्षित करके :- माता पिता को शिक्षित करके उस लायक बनाया जा सकता है कि अपने बच्चों की मानसिक स्थिति को समझे, उसे उचित देख रेख करें, तिरस्कार न करें और भगवान भरोसे न छोड़ दें। Early childhood में बच्चों की ऐसे लक्षणों पर ध्यान देने से, घर पर ही मोटे काम, वजन ढोना, ईंट-मट्टी का काम आदि सीख सकते हैं जो बाद में उन्हें आत्म निर्भर बनने में मदद कर सकता है। उनके माता पिता यदि शिक्षित हो जाते हैं तो उनमे पैदा लक्षणों को पहचान कर उनका उचित देखभाल करेंगे, जिससे उन्हें प्रेरणा मिलेगी और मोटा काम करने लायक हो सकते हैं।

(ii) स्कूल प्रशिक्षण :- वैसे बच्चे जो साधारण मानसिक दुर्बलता यानी Morons type के हैं उन्हें विद्यालय स्तर पर कामचलाऊ ढंग से अपना काम चलाने लायक प्रशिक्षण दिया जा सकता है। इससे उन्हें आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। उनकी शिक्षा के लिए Special class, Speciall Syllabus और Specially trained teacher की व्यवस्था होनी चाहिए जिससे ये शिक्षा/प्रशिक्षण आसानी से ग्रहण कर सकें और आत्मनिर्भर बन जाएं।

(iii) घरेलू प्रशिक्षण :- मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि ऐसे बच्चों को घरेलू माहौल में घर के सदस्यों द्वारा उचित तरीके से दिया गया प्रशिक्षण काफी कारगर होता है।

(iv) व्यवसाय चिकित्सा :- यह काफी लाभप्रद प्रविधि है। ऐसे बच्चों को उनके बुद्धि के लिहाज से पत्थर तोड़ना, मिट्टी का काम

वजन उठाने का काम, खेती बारी का काम आदि सिखलाया जा सकता है ताकि ये अपनी जीविकाअर्जन कर सके।

(V) संस्थाकरण (Institutionalization)।

मानसिक दुर्बलता से पीड़ित बच्चों को विशेष देखभाल की जरूरत होती है। उन्हें ऐसे चिकित्सालयों या संस्था में रखकर उपचार किया जाना चाहिए जहाँ इनके लिए विशेष प्रबन्ध हो।

इस प्रकार स्पष्ट तौर पर कहा जा सकता है कि मानसिक रूप से दुर्बल बच्चों की समस्याओं को जड़ से खत्म नहीं किया जा सकता है। उपर्युक्त दोनों प्रविधियों का आवश्यकतानुसार इस्तेमाल करके इस बढ़ती समस्या को कुछ हद तक कम किया जा सकता है।

RKSingh
13/5/2020
डॉ० रमेन्द्र कु० सिंह
मनोविज्ञान विभाग,
डी० के० कालेज, डुमराँव।

Scanned with CamScanner